Q→ लाइबनित्ज के पूर्वस्थापित सामंजस्य का विवरण दें?

Ans→ लाइबनित्ज जर्मन बुद्धिवादी, अद्वैतवादी तथा बहु तत्त्ववादी दार्शनिक हैं। इन्होंने विश्व की सम्यक विवेचना करने तथा द्रव्य में संकल्प स्वातन्त्र्य की प्रतिष्ठा करने के लिए अनन्त द्रव्यों की सत्ता को स्वीकार किया तथा बताया कि द्रव्य का एकमात्र गुण है 'चेतना' तथा इन चेतन द्रव्यों को चिद्‌णु की संज्ञा दी।

लाइबनित्ज के अनुसार इन चिद्‌णुओं को ईश्वर ने उत्पन्न किया तथा चिद्‌णुओं के बीच सम्बन्ध तथा जगत में एकरूपता, व्यवस्था, नियमबद्धता तथा इनकी स्वतन्त्र सत्ता की स्थापना के लिए चिद्‌णुओं के भीतर 'प्रभासन' तथा 'ईक्षण' डालकर इन्हें गवाक्षहीन कर दिया। इसके पश्चात् इन्हें व्यवस्थित क्रम में रखा। इस व्यवस्था के कारण ही जगत् में विस्तार का मिथ्या आभास होता है।

इन चिद्‌णुओं में चेतना की मात्रा में अन्तर होने के कारण इनकी क्रियाशीलता में अन्तर पाया जाता है, जिससे ये विश्व को भिन्न-भिन्न रूपों में प्रतिबिम्बित करते हैं। कोई चिद्‌णु विश्व को किस प्रकार प्रतिबिम्बित करेगा, यह

व्यवस्था ईश्वर ने चिद्‌णुओं की उत्पन्न करते समय ही कर दी थी, क्योंकि उसी सब कुछ पहले से ही ज्ञात था कि कब किस चिद्‌णु में किस प्रकार का प्रणोदन पैदा होगा और तब बाकी के चिद्‌णुओं में किस प्रकार का ईक्षण पैदा होगा ? इसी को 'पूर्वस्थापित सामंजस्य' कहते हैं।

उल्लेखनीय है कि चिद्‌णु का यह परिवर्तन साहचर्य होने के कारण बाहर से सम्बन्धित प्रतीत होता है इनके बीच किसी प्रकार की क्रिया-प्रतिक्रिया नहीं होती, बल्कि प्रत्येक चिद्‌णु अपने आत्मनिहित लक्ष्य की ओर अग्रसर है। परिणामस्वरूप चिद्‌णुओं की विशिष्टता तथा अनेकता होते हुए भी इनमें लक्ष्य की एकरूपता पाई जाती है।

किन्तु इस पूर्वस्थापित सामंजस्य को स्वीकार करने पर समस्या यह है कि जगत् में सर्वत्र संगति ही विद्यमान नहीं है, बल्कि असंगति भी है, साथ ही संकल्प, स्वातन्त्र्य तथा नैतिकता

पर भी प्रश्न चिन्ह लगता है।

लाइबनित्ज के अनुसार ईश्वर ने चिद्‌णुओं की रचना की तथा प्रत्येक चिद्‌णु में विराट विश्व छिपा है, जिसमें सभी कालों का ज्ञान निहित है। प्रत्येक चिद्‌णु सम्पूर्ण विश्व को प्रतिबिम्बित करता है। ईश्वर चिद्‌णुओं की सम्पूर्ण सम्भावना को जानता है। इससे ज्ञात होता है कि समस्त घटनाएँ उसके स्वरूप से ही सम्पादित होती हैं। चिद्‌णुओं की सम्पूर्ण सम्भावना ईश्वर पर निर्भर होती है। लाइबनित्ज कहता है कि ईश्वर चिद्‌णुओं के माध्यम से अपने उद्देश्य की पूर्ति करता है। इसलिए चिद्‌णुओं का स्वरूप ईश्वर की इच्छा पर निर्भर होने के कारण आयातित हो जाता है।

Teacher's Signature

Q→ बौद्ध के आष्टांगिक मार्ग की चर्चा करें ?

Ans→ बौद्ध दार्शनिकों की मान्यता है कि मनुष्य को निर्वाण तभी प्राप्त हो सकता है, जब अष्टांगिक मार्ग के अनुरूप निष्ठापूर्वक आचरण करें। ऐसा करने पर अविद्या का अन्त तथा प्रज्ञा का उदय होता है तथा मनुष्य को समस्त दुःखों से पूर्णतया छुटकारा मिल जाता है और वह संसार चक्र से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

निष्ठापूर्वक उपरोक्त आठ नियमों का पालन करने पर निर्वाण की प्राप्ति होती है। बौद्ध दार्शनिकों के अनुसार निर्वाण उपलब्ध कर लेने के बाद भी उसका वर्णन सम्भव नहीं है। तर्क और विचार द्वारा इस अवस्था को चित्रित करना सम्भव नहीं है। यही कारण है कि जब भी बुद्ध से निर्वाण के स्वरूप के बारे में पूछा जाता था, वे मौन का अवलम्बन कर लेते थे।

महायान बौद्ध धर्म का एक

सम्प्रदाय है, जो चार आर्य सत्यों के अनुरूप आचरण करने पर जीवित रहते ही निर्वाण को सम्भव मानता है। इसकी मान्यता है कि निर्वाण प्राप्त कर लेने पर समस्त दुःखों का समूल नाश हो जाता है, संसार चक्र की समाप्ति हो जाती है तथा व्यक्ति परम शान्ति तथा आनन्द का अनुभव करता है। इसकी मान्यता है कि निर्वाण प्राप्त करने के बाद भी व्यक्ति के अस्तित्व का समूल नाश नहीं होता, बल्कि व्यक्ति तब तक जीवित रहता है, जब तक उसके समस्त कर्म चुक नहीं जाते हैं। जीवित रहते निर्वाण प्राप्त कर लेने के बाद व्यक्ति निःस्वार्थ कर्म करता है, जिससे कर्मों का फल संचित नहीं होता। फलतः इन कर्मों का फल भोग करने के लिए उसे पुनः जन्म नहीं लेना पड़ता।

महायान सम्प्रदाय में ऐसे मुक्त व्यक्ति को बोधिसत्व कहा गया है। यह बोधिसत्व संसार में रहते हुए भी सांसारिक बन्धनों एवं दुःखों से प्रभावित नहीं होता। वह लोक कल्याण के निःस्वार्थ कर्म करता है, अतः ये कर्म उसे बन्धन में नहीं डालते। वह अन्य प्राणियों की मुक्ति के लिए निरन्तर प्रयास करता रहता है। वस्तुतः महायान

द्वारा प्रस्तुत बोधिसत्व का यह आदर्श भगवद्गीता के 'स्थितिप्रज्ञ' तथा सांख्य और अद्वैत वेदांत के 'जीवनमुक्त' के समान ही है। ये सभी मुक्त व्यक्ति स्वार्थ-परता, आसक्ति एवं अहंकार तथा सुख-दुःख, जय-पराजय, लाभ-हानि, राग-द्वेष आदि समस्त द्वन्द्वों से पूर्णतः मुक्त हो जाने और प्राणी मात्र के कल्याण के लिए अपने जीवन को समर्पित कर देने के कारण अपने जीवन काल में ही निर्वाण को प्राप्त कर लेते हैं।

उल्लेखनीय है कि महायान द्वारा वर्णित बोधिसत्व के उपरोक्त आदर्श को बौद्ध धर्म के एक अन्य सम्प्रदाय हीनयान द्वारा प्रस्तुत अर्हत के आदर्श की अपेक्षा अधिक महान् एवं वांछनीय माना जाता है।